अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

मंथन

संरक्षक एवं प्रेरणास्रोत

श्री दिवाकर नाथ मिश्रा

संयुक्त सचिव एवं निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण)

प्रधान संपादक

डॉ. जे. एस. रेड्डी

अपर निदेशक

सम्पादक

मनोज कुमार गुप्ता

उप निदेशक (तकनीकी)

सम्पादक मण्डल सदस्य

आर. एम. मंडलिक

उप निदेशक (तकनीकी)

श्री वसी असगर

सहायक निदेशक (तकनीकी)

निर्यात निरीक्षण परिषद

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग, भारत सरकार)

दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर, पूर्वी किदवई नगर,

नई दिल्ली–110023, भारत, दूरभाष : 011–20815386 / 87/88

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निर्यात निरीक्षण परिषद, हिंदी अनुभाग या सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क वितरण के लिए

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संदेश–श्री एस. किशोर, अपर सचिव एवं अध्यक्ष, निर्यात निरीक्षण परिषद	3
2.	निदेशक की कलम से – श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, आई.ए.एस., संयुक्त सचिव एवं निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद	4
3.	संदेश–डॉ जे. एस. रेड्डी, अपर निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद	6
4.	संपादकीय – मनोज कुमार गुप्ता, उप निदेशक (तकनीकी), निर्यात निरीक्षण परिषद	7
5.	संदेश–आर.एम. मंडलिक, उप–निदेशक (तकनीकी), निर्यात निरीक्षण परिषद	8
6.	माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण कार्यक्रम	9
7.	अक्टूबर 2020 से मार्च 2021 तक निनिप की प्रमुख गतिविधियां	14
8.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची के मुख्यालय में दिनांक 25.03.2021 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला की रिपोर्ट	16
9.	पशुजन्य रोग	20
10.	खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्यायन की भूमिका	23
11.	झींगा में डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस 1 (DIV1) और तिलापिया मछली में तिलापिया लेक वायरस (TiLV) के पता लगाने के लिए जांच उपकरण– निर्यात करने वाले देशों के लिए एक उभरती हुई परीक्षण आवश्यकता	26
12.	एकता में शक्ति	28
13.	मेडिटेशन (ध्यान) का महत्व	30
14	सकारात्मक दृष्टि का प्रभाव	32
15.	घर से काम (वर्क फ्रॉम होम)	33
16.	बुजुर्गों के अनुभव–हिन्दी मुहावरे	34
17.	सौम्य किन्तु लोकप्रियः वैनीला	36
18.	खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 10 मुख्य बिन्दु	38
19.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–उप कार्यालय : बैंगलोर सेवा–निवृत्ति कर्मचारी / निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुख्यालयः में नवनियुक्त तकनीकी अधिकारी	48

Dr. S. Kishore, IAS
Additional Secretary

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग
उद्योग भवन, नई दिल्ली–110 011

Government of India
Ministry of Commerce & Industry
Department of Commerce
Udyog Bhawan, New Delhi-110 011

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका ''**मंथन**'' अप्रैल–2021 अंक प्रकाशित किया जा रहा है। मंथन पत्रिका विभागीय गतिविधियों से सुसज्जित, सुंदर एवं आकर्षक होने के साथ ज्ञानवर्धक भी है। यह प्रशंसनीय है कि परिषद इस पत्रिका के अविरत प्रकाशन के माध्यम से कार्मिकों की सर्जनात्मकता को उजागर करने के साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में भी जागरुक रहती है। इस तरह पत्रिका का प्रकाशन सफलतापूर्वक निभाने के लिए संपादक मंडल के साथ पत्रिका के रचनाकार भी अभिनंदन के पात्र हैं।

साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान और विभागीय कार्यक्रमों से जुड़ी ''**मंथन**'' गृह पत्रिका राजभाषा के प्रति कर्मचारियों की प्रतिभा को उजागर करने के अपने उद्देश्यों को साकार करती है। कार्मिकों में अंतर्लीन सर्जनात्मकता को आलोकित करते हुए पत्रिका के निरंतर प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक मंगलकामनाएं।

(एस. किशोर)
अपर सचिव एवं अध्यक्ष
निर्यात निरीक्षण परिषद

सत्यमेव जयते

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

EXPORT INSPECTION COUNCIL

(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)

(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

निदेशक की कलम से

मेरे प्रिय सहकर्मियों,

आपको ज्ञात है कि हम पूरी महत्वाकांक्षाओं के साथ वर्ष 2021 के प्रथम चरण में प्रवेश किया ही था, कि कोविड–19 महामारी का दूसरा दौर समस्त भारत को झकझोर करके अपना तांडव स्वरूप का प्रदर्शन करते हुए हमें भयभीत करने लगा था। महामारी की परेशानियों से जूझते हुए हमने भी डिजिटल दुनिया के सहारे कर्तव्यों के पालन करने में हरसंभव प्रयास किया है। इस डरावने हकीकत की दुनिया से देश को आगे बढाने की राहत हासिल करने में निर्यात निरीक्षण परिषद भी अपने सह संगठनों के साथ अपनी गतिविधियों को अंजाम देने के प्रयास में लगी हुई है। हमारे सुव्यवस्थित प्रविधियों, मानदंडों और नियमों को नई विश्व व्यवस्था से ताल मेल जोड़ना आज की मांग रही है। इस कठिन दौर में विश्व स्तर पर अपने पुनर्निर्माण की विवशता हमारे सम्मुख है।

वर्तमान संकट सभी देशों का है। यह वास्तव में अत्यधिक अनिश्चितता लायी है। लेकिन हमें उम्मीद के साथ आगे बढ़ना भी अति आवश्यक है। बीमारी के संक्रमणकाल को सीमित और नियंत्रित करते हुए अपने वाणिज्य श्रृंखला को पुनःस्थापित किया जाना है। कोविड –19 के वर्तमान व्यवधानों से बाहर निकलने के लिये अपनी परंपराओं से हटकर बाहरी वातावरण के अनुकूल अपने को ढ़ालने की क्षमता अर्जित करते हुए अपने संकल्पों को दृढता से हासिल करेंगे। वैश्विक संकट के इस दौर में दुनिया की आपूर्ति श्रृंखलाओं को बनाए रखना और देशों के बीच आयात–निर्यात की गति बनाए रखना बेहद आवश्यक है।

इसके साथ ही अकेलेपन से घिरी मानसिकता स्वाभाविक ज़िंदगी पलटने में वक्त नहीं लेती। इस तरह की परिस्थिति से राहत हासिल करने में सबसे अच्छा मार्ग है, जो भी आप महसूस कर रहे हैं उन्हें लेखनबद्ध करना। अपने मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखना, इस माहौल में अधिक महत्वपूर्ण कार्य है। आपके द्वारा अभिव्यक्त विचार आपके

दुश्चिंता और तनाव को दूर करने में अवश्य काम आयेगा। दिमाग को तरोताज़ रखने में और नए विचार पनपने में विचारों की अभिव्यक्ति एक अच्छा मार्ग है।

अपने संगठन के मुख्य कार्यकलापों के साथ ही साथ हम राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन में भी प्राथमिकता देते आ रहे हैं। ''मंथन'' का प्रकाशन कार्मिकों की सृजनात्मक वैभव को निखारने का एक अनोखा अवसर खोल देता है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह गृह पत्रिका ''मंथन'' निर्यात निरीक्षण परिषद एवं अभिकरणों में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से कार्यालयीन कार्यकलापों के साथ–साथ साहिति्यक्त रचनाओं को भी प्रफुल्लित करने में सक्षम माध्यम बनेगी।

निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय में 2 अक्टूबर 2020 को गांधी जयंती के उपलक्ष्य में 'महात्मा गांधी' की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई। इसके उपरान्त भूटान कृषि और खाद्य नियामक प्राधिकरण (बाफरा) ने दिनांक 06 अक्टूबर, 2020 से 15 नवंबर, 2020 तक सार्वजनिक अधिसूचना के माध्यम से सूचित किया है। कि भारत से भूटान में पोर्क और पोर्क उत्पादों के आयात की अनुमति केवल निनिप द्वारा जारी स्वास्थ्य प्रमाण पत्र के साथ दी जाएगी। निनिप के अधिकारियों द्वारा बाफरा के लोगों को आईटीसी/एफएसएएन में मार्च 2021 पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया, इसके अलावा निर्यात निरीक्षण परिषद एवं निर्यात निरीक्षण अभिकरण कार्यालयों में स्वच्छता पखवाड़ा 01.11.2020 से 15.11.2020 तक स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया।

निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका ''मंथन'' के अप्रैल, 2021 अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करने में मुझे बहुत ही हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस माहौल में मुझे आपसे कुछ कहना है तो मैं ज़रूर यह कहना चाहूंगा कि मौजूदा सामाजिक अलगाव की स्थिति में भावों और विचारों को लिपिबद्ध करते हुए मानसिक तनाव से दूर रहें और मानसिक एकता बनाए रखें।

संगठन के सभी कर्मियों को उत्तम स्वास्थ्य एवं कल्याण की शुभकामनाओं के साथ।

शुभकामनाओं के साथ,

(दिवाकर नाथ मिश्रा, आई.ए.एस.)
संयुक्त सचिव एवं निदेशक
निर्यात निरीक्षण परिषद

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

संदेश

निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका मंथन अंक, अप्रैल–2021 के अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा हैं। निर्यात निरीक्षण परिषद एवं इससे संबंधित सभी अभिकरणों में राजभाषा नियमों एवं अधिनियमों के अधीन हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

निर्यात निरीक्षण परिषद/निर्यात निरीक्षण अभिकरण कार्यालयों में मुख्य कार्य निर्यात व्यापार से संबंधित है, तथा इसका निपटान आयात करने वाले देशों की कार्यनीति के अनुसार करना पड़ता हैं। इस परिस्थिति में हम चाहते है कि जहॉ तक संभव हो, अन्य सारे कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाए, अन्य कार्यकलापों के साथ ही राजभाषा विभाग के दिशा निर्देशों के अनुसार हिन्दी कार्यान्वयन कार्य भी सुगमता से आगे बढ़े। इसके लिए दृढ़ संकल्प एवं इच्छा शक्ति से अपनी राजभाषा का प्रयोग फाइलों में करने का अधिकतम प्रयास अवश्य ही करें। राजभाषा हिन्दी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ही इस पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा हैं।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप पूर्ण निष्ठा के साथ राजभाषा हिन्दी की महत्वा को उजागर करते हुए अपने कार्यालयीन कार्यो को हिन्दी में निभाने के साथ–साथ अपने भावों और विचारों को क्रमबद्ध करते हुए मंथन पत्रिका के प्रकाशन में निरंतरता में अपना अमूल्य योगदान सुनिश्चित करते रहें।

मंथन पत्रिका के इस अंक के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामानायें।

जे एस रेड्डी

(डॉ जे. एस. रेड्डी)
अपर निदेशक

E-mail : eic@eicindia.gov.in
Website : www.eicindia.gov.in
ग्राम : निर्याततगुण
Grames : Shipmentquality
दूरभाष / Phone } 011-20815386/87/88

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित छमाही हिन्दी गृह पत्रिका "मंथन" अप्रैल – 2021 अंक को आपके सम्मुख समर्पित करने पर अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

मंथन पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं विकास में सहायक बनने के हमारे दृढ़ संकल्प का परिणाम हैं। मंथन के प्रकाशन का कार्य आप सभी के योगदान से ही सफलता से संपन्न होता है। इसलिए मैं अपने सहकर्मियों से अपील करना चाहता हूँ कि अपने विचारों की अभिव्यक्ति, साहित्यिक लेख, अनुभूतियॉं, कार्यालय के कार्यकलाप, यात्रा विवरण आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए पत्रिका के प्रकाशन कार्य को समय पर संपन्न करने में अपना सहयोग सुनिश्चित करें।

मंथन पत्रिका के प्रकाशन को और अधिक रोचक एवं सार्थक बनाने में पाठकों के बहुमूल्य विचारों का अति महत्वपूर्ण स्थान है। आपसे प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रियाएं अवश्य ही प्रेरणादायक रही हैं। यह अंक भी आपके बहुमूल्य प्रतिक्रिया के लिए सहर्ष आपके समक्ष समर्पित है।

मंथन पत्रिका के इस सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(मनोज कुमार गुप्ता)
उप–निदेशक (तकनीकी)

E-mail : eic@eicindia.gov.in
Website : www.eicindia.gov.in
ग्राम : निर्याततगुण
Grames : Shipmentquality
दूरभाष / Phone } 011-20815386/87/88

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
2nd Floor, B-Plate, Block-1, Commercial Complex,
East Kidwai Nagar, New Delhi-110023, India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा अविराम अपनी छमाही हिन्दी पत्रिका 'मंथन' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका संगठन में न केवल आपसी संपर्क की कड़ी को सुदृढ बनाती है बल्कि कार्यालयीन कार्यों को साझा करने से आपसी सहयोग को बढ़ाती है। मेरा विश्वास है कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्दिष्ट हिंदी कार्यान्वयन नीति को अमल में लाने का एक सुदृढ माध्यम है हिंदी पत्रिका का प्रकाशन। एक पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को हिंदी में सभी पाठकों के सम्मुख पेश आना राजभाषा के प्रति कार्मिकों को आकर्षित करने तथा भाषायी सौहार्द को मजबूत करने का बखूबी अवसर भी प्राप्त होता है।

मैं इसके अविरत प्रकाशन की कामना करता हूं। 'मंथन'' गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये संपादक मंडल एवं इसके प्रकाशन के लिए सहयोग दिए परिषद एवं इसके विभिन्न अभिकरणों में कार्यरत सभी कार्मिकों को हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं।

(आर. एम. मंडलिक)
उप–निदेशक (तकनीकी)
अतिरिक्त प्रभार–उ.नि.–गैर तकनीकी

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण कार्यक्रम

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के द्वारा दिनांक 26 नवम्बर, 2020 को निर्यात निरीक्षण परिषद, नई दिल्ली कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निनिप कार्यालय में राजभाषा कार्यो पर संसदीय राजभाषा समिति ने संतोष व्यक्त किया और सभी अधिकारियों का हार्दिक अभिनंदन किया। संसदीय राजभाषा समिति की और से निम्नलिखित माननीय संसद सदस्य एवं अधिकारियों ने भाग लिया .

1. श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा), उपाध्यक्ष संसदीय राजभाषा समिति
2. श्रीमती कान्ता कर्दम, संसद सदस्य (राज्य सभा)
3. सुश्री सरोज पाण्डेय, संसद सदस्य (राज्य सभा)
4. श्री गोपी चन्द्र छावनिया, सचिव (समिति), संसदीय राजभाषा समिति
5. डॉ. सत्येन्द्र सिंह, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
6. श्री विकास वर्मा, हिन्दी अधिकारी
7. श्री मुकेश शर्मा, समिति रिपोर्ट
8. श्री अब्दुल मोहीब, समिति सहायक

इस राजभाषा निरीक्षण के दौरान निर्यात निरीक्षण परिषद, तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, की ओर से निम्नलिखित अधिकारियो के द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया।

1. श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, संयुक्त सचिव, निदेशक, निनिप।
2. डॉ. सुरेन्द्र कुमार अहिरवार, संयुक्त सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय।
3. श्री सुबोध कुमार, निदेशक राजभाषा, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय।
4. डॉ. जे. एस. रेड्डी, अपर निदेशक, निनिप।
5. श्री आर.एम. मंडलिक, उप निदेशक (तकनीकी), निनिप।
6. श्री वसी असगर, सहायक निदेशक (तकनीकी), निनिप।
7. श्री ब्रजेश कुमार शर्मा, क. हिन्दी अनुवादक, निनिप।

संसदीय राजभाषा समिति के द्वारा निर्यात निरीक्षण परिषद का दिनांक 26–11–2020 राजभाषा निरीक्षण करते हुए माननीय संसद सदस्य।

राजभाषा निरीक्षण के दौरान संसदीय राजभाषा समिति एवं निनिप के अधिकारीगण

निर्यात निरीक्षण परिषद की राजभाषा प्रदर्शनी

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय एवं निर्यात निरीक्षण परिषद के श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, संयुक्त सचिव एवं निदेशक, निनिप राजभाषा निरीक्षण के दौरान।

श्री भर्तहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा), उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति का श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, संयुक्त सचिव, निदेशक, निनिप के द्वारा सम्मान प्रदान करते हुए।

श्रीमती कांता कर्दम, संसद सदस्य (राज्यसभा), संसदीय राजभाषा समिति का श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, संयुक्त सचिव, निदेशक, निनिप के द्वारा सम्मान प्रदान करते हुए

श्रीमती कांता कर्दम, संसद सदस्य (राज्यसभा), संसदीय राजभाषा समिति के द्वारा निनिप की राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

श्री भर्तहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा), उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति से श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, संयुक्त सचिव, निदेशक, निनिप एवं वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय एवं निनिप के अधिकारियों द्वारा राजभाषा प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए।

अक्टूबर 2020 से मार्च 2021 तक निनिप की प्रमुख गतिविधियां:

- निर्यात निरीक्षण परिषद, नई दिल्ली कार्यालय में 02 अक्टूबर 2020 को गांधी जयंती के उपलक्ष्य में ''महात्मा गांधी'' की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई।

- भूटान कृषि और खाद्य नियामक प्राधिकरण (बाफरा) ने दिनांक 06 अक्टूबर, 2020 की सार्वजनिक अधिसूचना के माध्यम से सूचित किया है कि भारत से भूटान में पोर्क और पोर्क उत्पादों के आयात की अनुमति केवल निनिप द्वारा जारी स्वास्थ्य प्रमाण पत्र के साथ दी जाएगी।

- निर्यात निरीक्षण परिषद एवं निर्यात निरीक्षण अभिकरणों के कार्यालयों में स्वच्छता पखवाड़ा दिनांक 01.11.2020 से 15.11.2020 तक स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया।

- कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (ऐपिडा) और कनाडाई खाद्य निरीक्षण एजेंसी (सीएफआईए) के साथ साझेदारी में निनिप ने 1 दिसंबर 2020 को "खाद्य निर्यातः नियामक और सुरक्षा मानकों को समझना" पर एक आभासी कार्यशाला का आयोजन किया।

- निनिअ–मुंबई प्रयोगशाला को एनएमआर (न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस) स्पेक्ट्रोस्कोपी का उपयोग करके शहद में भौगोलिक उत्पत्ति और मिलावट के विश्लेषण के लिए आईएसओ–17025:2017 के अनुसार मान्यता मिली है।

- आईटीसी–एफएसएएन (खाद्य सुरक्षा और अनुप्रयुक्त पोषण के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र), निनिप, एफएसएसएआई और जीएफएसपी की एक संयुक्त पहल ने 22 सितंबर 2020 को अपनी पहली वर्षगांठ मनाई। केंद्र ने एक वर्ष में 150 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए और 30,000 से अधिक व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया।

- राजभाषा विभाग, त्रिवेंद्रम द्वारा दिनांक 15.01.2021 को हिंदी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टीओएलआईसी) टॉलिक हिंदी कार्यशाला प्रातः 11.00 बजे प्रारंभ हुई। राजभाषा

विभाग की उप निदेशक डॉ. मीनाखी जॉली ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और तकनीकी संगोष्ठी और 'राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कंठस्थ' सॉफ्टवेयर के कार्यान्वयन पर एक संक्षिप्त भाषण दिया। इसके बाद कार्यशाला हुई और फैकल्टी श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक, इस्पात मंत्रालय ने राजभाषा साइट पर लिंक के माध्यम से सॉफ्टवेयर का उपयोग करने का क्रमवार वर्णन किया। कार्यक्रम दोपहर 1.00 बजे समाप्त हुआ।

- कनाडाई खाद्य निरीक्षण एजेंसी (सीएफआईए) और एपीडा के सहयोग से निनिप ने "खाद्य निर्यातः एलर्जेन लेबलिंग आवश्यकताएं" पर एक आभासी कार्यशाला का आयोजन किया। इससे निर्यातकों को कनाडाई एलर्जेन लेबलिंग आवश्यकताओं को समझने में मदद मिलेगी जो इस खाते पर अस्वीकृति को कम करने/रोकने में मदद करेगी।

निनिअ-कोच्ची के मुख्यालय में दिनांक 25.03.2021 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला की रिपोर्ट

अपना कार्यालयीन काम हिन्दी में करने में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची, मुख्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 25 मार्च, 2021 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के संचालन के लिये श्री के. के. रामचंद्रन, उप निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, कोच्ची नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, आयकर विभाग को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में 05 अधिकारियों एवं 05 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में भाग लिए प्रतिभागियों की सूची संलग्न है।

कोविड 19 महामारी के प्रकोप के मद्देनज़र प्राप्त निदेश के अनुसार हिंदी कार्यशाला का आयोजन वेबनार के माध्यम से किया गया। श्री.चंद्रकांत बी.कोटक, उप निदेशक (प्रभारी) ने संकाय सदस्य एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। सभी प्रतिभागियों से कार्यालय के दैनिक कार्यों के अधिकाधिक काम हिंदी में करने के लिए अनुरोध किया गया। कार्यशाला का उद्‌घाटन श्री चंद्रकांत बी. कोटक, उप निदेशक (प्रभारी) ने किया। उन्होंने खुद पूरी कार्यशाला में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करते हुए कार्यशाला के आयोजन को गौरवान्वित किया। भागीदारों से आग्रह किया गया कि कार्यशाला में कार्यालयीन काम हिंदी में करने पर होने वाले अट्‌चनों को दूर करने के लिए संकाय सदस्य से आवश्यक मार्ग निर्देश प्राप्त किए जाएं और आगे से अपने अपने रोजमर्रा के कामकाज हिंदी में निभाने का भरसक प्रयास किया जाए।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में संकाय सदस्य श्री. के. के. रामचंद्रन, उप निदेशक (राजभाषा) द्वारा कार्यालय के रोज के कामकाज में विभाग से जुडी शब्दावलियों का परिचय करवाया। राजभाषा अधिनियम 1963 एवं नियम 1976 को अपने कार्यालय के संदर्भ में विस्तार से समझाया गया और सारे भागीदारों को राजभाषा हिंदी की प्रासंगिकता एवं सरकारी कर्मचारी होने के नाते हिंदी को उचित दर्जा प्रदान करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। अपने अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की संभाव्यता पर विशेष ध्यान देते हुए अधिकाधिक काम हिंदी में निभाने की सलाह दी गई।

कार्यशाला समाप्त होने के पश्चात उप निदेशक (प्रभारी) द्वारा हर भागीदार से कार्यशाला से अर्जित ज्ञान एवं अपने कार्यों में उसकी उपयोगिता के मूल्याँकन करते हुए अपनी अपनी राय प्रकट करने का अनुरोध किया गया। सभी प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उनके ज्ञान को तरोताज़ करने के लिये आगे भी कार्यशाला संचालित करने की आवश्यकता तथा हिंदी के प्रयोग के संबंध में शंकाओं को दूर करने के अवसर प्राप्त करने पर संतोष प्रकट किया। कार्यशाला से संबद्ध कुछ छायाचित्र भी संलग्न हैं।

कार्यशाला का स्वागत भाषण एवं उद्घाटन करते हुए कार्यालय अध्यक्ष श्री सी.बी.कोटक, उप निदेशक प्रभारी

श्री.के.के.रामचंद्रन, उप निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, कोच्ची नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, आयकर विभाग कार्यशाला संचालित करते हुए

पशुजन्य रोग

डॉ. जे.एस. रेड्डी
अपर निदेशक
निनिप, नई दिल्ली

- पशुजन्य रोग कोई भी बीमारी या संक्रमण है जो प्राकृतिक रूप से कशेरुकी जानवरों से मनुष्यों में फैलता है।
- 200 से अधिक ज्ञात प्रकार के पशुजन्य रोग हैं।
- पशुजन्य रोग में मनुष्यों में नई और मौजूदा बीमारियों का एक बड़ा प्रतिशत शामिल है।
- कुछ पशुजन्य रोग, जैसे रेबीज, टीकाकरण और अन्य तरीकों से 100% अनिवार्य हैं।

पशुजन्य रोग एक संक्रामक रोग है जो एक गैर–मानव जानवर से मनुष्यों में संक्रमित हो जाता है। पशुजन्य रोगजनक बैक्टीरिया, वायरल या परजीवी हो सकते हैं, या इसमें अपरंपरागत एजेंट शामिल हो सकते हैं और सीधे संपर्क या भोजन, पानी या पर्यावरण के माध्यम से मनुष्यों में फैल सकते हैं। कृषि में, साथी के रूप में और प्राकृतिक वातावरण में जानवरों के साथ हमारे घनिष्ठ संबंध के कारण वे दुनिया भर में एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। पशुजन्य रोग खाद्य एवं अन्य उपयोगों के लिए पशु उत्पादों के उत्पादन और व्यापार में व्यवधान पैदा कर सकते हैं।

पशुजन्य रोग में सभी नए पहचाने गए संक्रामक रोगों के साथ–साथ कई मौजूदा संक्रामक रोगों का एक बड़ा प्रतिशत शामिल है। कुछ रोग, जैसे कि एचआईवी, एक पशुजन्य रोग के रूप में शुरू होते हैं, लेकिन बाद में केवल मानव उपभेदों में उत्परिवर्तित होते हैं। अन्य पशुजन्य रोग बार–बार होने वाली बीमारी के प्रकोप का कारण बन सकते हैं, जैसे कि इबोला वायरस रोग और साल्मोनेलोसिस। अभी भी अन्य, जैसे कि नोवल कोरोनवायरस जो कोविड–19 का कारण बनता है, वैश्विक महामारी का कारण बनने की क्षमता रखता है।

रोकथाम और नियंत्रण

पशुजन्य रोगों की रोकथाम के तरीके प्रत्येक रोगजनक के लिए भिन्न होते हैं; हालांकि, कई प्रथाओं को समुदाय और व्यक्तिगत स्तरों पर जोखिम को कम करने में प्रभावी माना जाता है। मांस, अंडे, डेयरी या यहां तक कि कुछ सब्जियों जैसे खाद्य पदार्थों के माध्यम से खाद्य जनित पशुजन्य रोग के प्रकोप की क्षमता को कम करने में कृषि क्षेत्र में पशुओं की देखभाल के लिए सुरक्षित और उचित दिशा–निर्देश मदद करते हैं। स्वच्छ पेयजल और अपशिष्ट हटाने के मानक, साथ ही प्राकृतिक वातावरण में सतही जल की सुरक्षा भी महत्वपूर्ण और प्रभावी हैं। जानवरों के संपर्क में आने के बाद हाथ धोने को प्रोत्साहित करने

के लिए शिक्षा अभियान और अन्य व्यवहार व्यवस्थापन पशुजन्य रोगों के होने पर सामुदायिक प्रसार को कम कर सकते हैं।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध पशुजन्य रोग के नियंत्रण और रोकथाम में एक जटिल कारक है। भोजन के लिए उठाए गए पशुओं में एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग व्यापक है और पशु और मानव आबादी में तेजी से फैलने में सक्षम पशुजन्य रोगजनकों के दवा प्रतिरोधी उपभेदों की क्षमता को बढ़ाता है।

जोखिम में कौन है?

पशुजन्य रोगजनक घरेलू, कृषि या जंगली जानवरों के साथ किसी भी संपर्क बिंदु के माध्यम से मनुष्यों में फैल सकते हैं। कुछ जंगली जानवरों की आबादी में मौजूद बड़ी संख्या में नए या अनिर्दिष्ट रोगजनकों के मोजूद होने के कारण जंगली जानवरों के मांस या उप—उत्पाद को बेचने वाले बाजार विशेष रूप से उच्च जोखिम वाले हैं। खेती जानवरों के लिए एंटीबायोटिक दवाओं के उच्च उपयोग वाले क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों में वर्तमान रोगाणुरोधी दवाओं के प्रतिरोधी रोगजनकों का खतरा बढ़ सकता है।

जंगली क्षेत्रों के आस—पास या अर्ध—शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को अधिक संख्या में जंगली

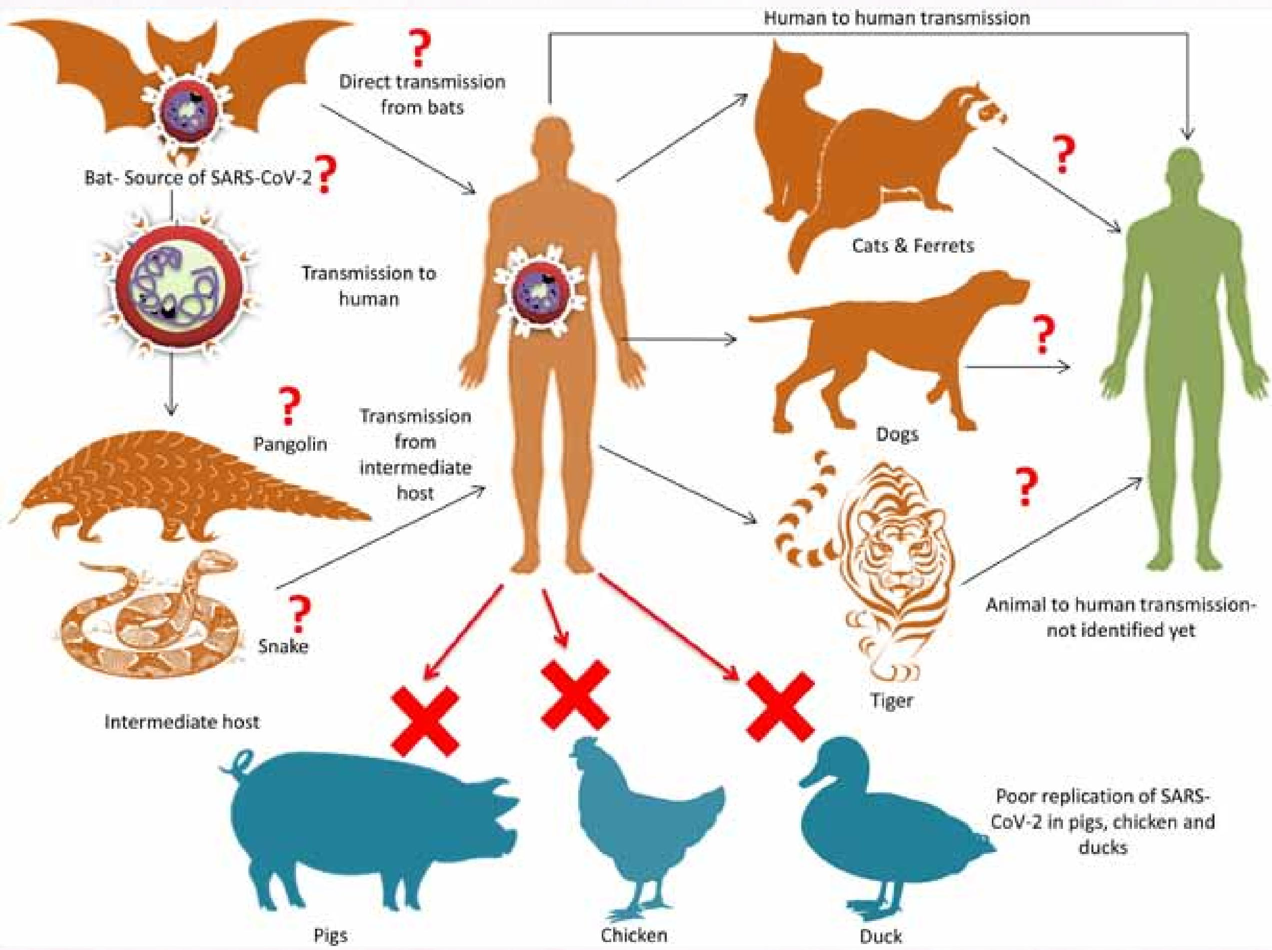

जानवरों से चूहों, लोमड़ियों या रैकून जैसे जानवरों से बीमारी का खतरा होता है। शहरीकरण और प्राकृतिक आवासों के विनाश से मनुष्यों और जंगली जानवरों के बीच संपर्क बढ़ने से पशुजन्य रोगों का खतरा बढ़ जाता है।

डब्ल्यूएचओ प्रतिक्रिया

डब्ल्यूएचओ पशुजन्य खतरों और उनके सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को रोकने और प्रबंधित करने के लिए राष्ट्रीय सरकारों, शिक्षाविदों, गैर–सरकारी और परोपकारी संगठनों और क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ काम करता है। इन प्रयासों में क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर विभिन्न प्रासंगिक क्षेत्रों के बीच मानव–पशु–पर्यावरण इंटरफेस पर क्रॉस–सेक्टोरल सहयोग को बढ़ावा देना शामिल है। डब्ल्यूएचओ क्षमता विकसित करने और प्रायोगिक, साक्ष्य–आधारित और लागत प्रभावी उपकरण और तंत्र को बढ़ावा देने, रिपोर्टिंग, महामारी विज्ञान और प्रयोगशाला जांच, जोखिम मूल्यांकन और नियंत्रण के माध्यम से रोकथाम, निगरानी और पता लगाने के लिए तंत्र और उनके कार्यान्वयन में देशों की सहायता करने के लिए भी काम करता है।

एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में, विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रमुख पशु रोगों के लिए वैश्विक प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (जीएलईडब्ल्यूएस) पर संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (ओआईई) के साथ सहयोग करता है। यह संयुक्त प्रणाली डेटा साझाकरण और जोखिम मूल्यांकन के माध्यम से, पशुजन्य रोग सहित, पशु रोग के खतरों की प्रारंभिक चेतावनी, रोकथाम और नियंत्रण में सहायता करने के लिए तीन अभिकरणों के अलर्ट तंत्र के संयोजन के मूल्यवर्धित समन्वय पर आधारित है।

खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्यायन की भूमिका

डॉ. अनूप ए. कृष्णन, सहायक निदेशक (तकनीकी)
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची

प्रत्यायन

प्रत्यायन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा परीक्षण करने वाली प्रयोगशाला अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार एक सक्षम प्रत्यायन निकाय द्वारा तीसरे पक्ष के मूल्यांकन के आधार पर अपनी तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन करती है। प्रत्यायन अंतरराष्ट्रीय मानकों के आधार पर परीक्षण, अंशांकन, प्रमाणन और निरीक्षण जैसी अनुरूपता मूल्यांकन सेवाएं प्रदान करने वाले संगठनों की तकनीकी क्षमता, अखंडता और निष्पक्षता निर्धारित करता है। प्रत्यायन प्रयोगशाला की तकनीकी योग्यता निर्धारित करने के लिए विकसित विशिष्ट मानदंडों का उपयोग करता है। यह आम तौर पर प्रयोगशाला की तकनीकी क्षमता का एक स्वतंत्र मूल्यांकन (निर्धारण/ऑडिट) है।

प्रत्यायन की आवश्यकता क्यों?

भारत सरकार की व्यापार उदारीकरण और उद्योग नीतियों ने घरेलू व्यापार में गुणवत्ता जागरूकता पैदा की है और निर्यात के लिए अधिक जोर दिया है। परिणामस्वरूप परीक्षण प्रयोगशालाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य क्षमता के स्तर पर प्रदर्शन करना पड़ता है। प्रत्यायन अंतरराष्ट्रीय पहचान देता है, वैश्विक बाजार तक पहुंच देता है, समय और धन में कटौती करता है, आयात करने वाले देशों/व्यापारिक भागीदारों के लिए विश्वास पैदा करता है, उत्पन्न परिणामों की विश्वसनीयता और सटीकता पर आश्वासन देता है और दोषपूर्ण उत्पादों के निर्यातक या आयातित होने के नुकसान को रोकता है।

प्रयोगशाला प्रत्यायन क्या लाभ प्रदान करता है?

परीक्षण में प्रत्यायन आईएसओ/आईईसी 17025:2017 का अनुपालन, परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं की क्षमता के लिए सामान्य आवश्यकताओं के माध्यम से है। वर्तमान में भारत में एक प्रत्यायन निकाय जो उक्त मानक के अनुसार परीक्षण में तकनीकी योग्यता सुनिश्चित

करता है, वह परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के तहत भारत की गुणवत्ता परिषद का एक संघटक बोर्ड है। नीचे दिए गए प्रयोगशाला प्रत्यायन के लाभ कई हैं लेकिन निम्नलिखित तक सीमित नहीं हैं और जैसा कि चित्र 1 में दिया गया है :

चित्र 1: प्रयोगशाला प्रत्यायन के कुछ लाभों का प्रतिनिधित्व

- अंतर्राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक बाजार तक पहुंच
- समय और धन की बचत के रूप में यह पुनः परीक्षण की आवश्यकता को कम या समाप्त करता है
- उत्पन्न परीक्षण रिपोर्ट में विश्वास बढ़ा
- ग्राहक की जरूरतें और बढ़ा हुआ आत्मविश्वास और संतुष्टि
- प्रयोगशाला प्रबंधन प्रणाली के साथ गुणवत्ता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर सकती है
- प्रयोगशाला कार्य का व्यवस्थित और बेहतर संचालन नियंत्रण
- सटीक और विश्वसनीय परिणामों का आश्वासन
- नियामक और आयातक देशों की आवश्यकताओं का अनुपालन
- प्रयोगशालाओं को समानता देता है
- व्यापार में वृद्धि
- प्रत्यायन के संकेत के रूप में प्रत्यायन निकाय चिन्ह का प्रयोग

प्रयोगशालाओं को प्रत्यायन की आवश्यकता क्यों है?

- सटीक, विश्वसनीय पुनरुत्पादनीय परीक्षण परिणाम सुनिश्चित करने के लिए
- परीक्षण के परिणाम में स्थिरता और एकरूपता प्राप्त करने के लिए
- ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए
- नियामक और सरकारी अभिकरणों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए
- उत्पन्न परीक्षण रिपोर्ट की वैश्विक स्वीकृति

नियामकों को मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं की आवश्यकता क्यों है?

- अपने स्वयं के विशेषज्ञ मूल्यांकन कर्मियों को नियुक्त करने के लिए केंद्र और स्थानीय सरकार की आवश्यकता को कम करें। प्रत्यायन, नमूनाकरण और परीक्षण के वाणिज्यिक प्रदाताओं पर भरोसा करने के लिए नियामकों को आश्वासन प्रदान करता है।
- प्रयोगशाला संचालन और प्रयोगशालाओं की प्रतिक्रिया का बेहतर नियंत्रण कि क्या उनके पास ध्वनि गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली है और तकनीकी रूप से सक्षम हैं
- परिणामों और प्रमाणपत्रों की अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति और व्यापार के लिए तकनीकी बाधाओं को दूर करके एक अधिक प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था का निर्माण।
- ऐसी गतिविधियों की आपूर्ति श्रृंखला और सार्वजनिक विश्वास का निर्माण करें जिनमें जनता के विश्वास, स्वास्थ्य और सुरक्षा या पर्यावरण पर प्रभाव डालने की क्षमता हो।

झींगा में डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस 1 (DIV1) और तिलापिया मछली में तिलापिया लेक वायरस (TiLV) के पता लगाने के लिए जांच उपकरण- निर्यात करने वाले देशों के लिए एक उभरती हुई परीक्षण आवश्यकता।

डॉ विनय कुमार, सहायक निदेशक
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्चि

विश्व स्तर पर, झींगा उद्योग, वायरस (WSSV, TSV, YHV, IMNV, IHHNV और MrNV) और अन्य रोगजनकों (EMS/AHPND और EHP) के कारण होने वाली कई बीमारियों के कारण भारी आर्थिक और उत्पादन हानि का सामना कर रहा है। हाल ही में एक और उभरती हुई झींगा वायरल बीमारी झींगा उद्योग को उच्च मृत्यु दर और जलीय कृषि झींगा को गंभीर नुकसान पहुंचा रही है। यह रोग एक डबल स्ट्रैंड डीएनए वायरस के कारण होता है जिसका नाम डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस 1 है, जिसका जीनोम आकार लगभग 166 किलोबेस है। मछली (जिसमें झींगा भी सम्मिलित है) और अन्य मत्स्य उत्पादों में वायरस या रोगजनकों और उनकी मात्रा का पता लगाने में रीयल–टाइम पीसीआर आधारित विधियाँ, इनकी उच्च संवेदनशीलता और विशिष्टता के कारण पसंद की जाती है। कुछ रीयल–टाइम पीसीआर विधियां वायरल डीएनए की 10 से भी कम प्रतियों (कॉपियों) का पता लगा सकती हैं। डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस 1 का पता लगाने के लिए, एक नई प्रोब आधारित रीयल–टाइम पीसीआर जांच विकसित की गई थी, यह डीआईवी1 के मेजर कैप्सिड प्रोटीन (एमसीपी) का पता लगाने पर आधारित थी। यह विधि डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस का पता लगाने के लिए अत्यधिक विशिष्ट पाई गई और इस विधि की विश्लेषणात्मक संवेदनशीलता या लिमिट ऑफ डिटेक्शन 1.2 कॉपियों/ रिएक्शन के रूप में देखी गई (Qiu Liang, 2020)।

वैश्विक ध्यान के लिए एक और बीमारी तिलापिया लेक वायरस रोग है। यह एक उभरती हुई वायरल बीमारी है जो जंगली और खेती वाली तिलापिया मछली में उच्च मृत्यु दर से जुड़ी है। तिलापाइनस दुनिया भर में खेती की जाने वाली मछलियों का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण समूह है, जिसमें मछलियों की 100 से अधिक प्रजातियाँ शामिल हैं। तिलापाइनस तेजी से बढ़ने वाले, अपेक्षाकृत रोग प्रतिरोधी और विकासशील देशों में आहार प्रोटीन के सबसे महत्वपूर्ण और सस्ते स्रोत में से एक हैं। ये गुण दुनिया भर में खेती के लिए तिलापाइनस को सबसे उपयुक्त बनाते हैं। हालाँकि, अब कई देश तिलापिया लेक वायरस रोग का सामना कर रहे हैं जो कि तिलापिया लेक वायरस के कारण होता है। तिलापिया लेक वायरस एक 10–खंड वाले नेगेटिव सेंस आरएनए जीनोम के साथ इस नई बीमारी का एक उभरता हुआ इटीयोलॉजिकल एजेंट है और इसे पहली बार 2014 में इज़राइल में रिपोर्ट किया गया था और बाद में दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में पाया गया। कई स्थानों पर इस रोग का प्रकोप महत्वपूर्ण मृत्यु

दर और रुग्णता की विशेषता है, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया भर में तिलापिया मत्स्य उद्योगों को भारी नुकसान होता है। इस प्रकार, जंगली और सुसंस्कृत तिलापिया मछली के अंगों में तिलापिया लेक वायरस का पता लगाने और उसकी सही मात्रा के बारे में जानने के लिए कुशल तरीकों की आवश्यकता है जिनमें से एक रियल टाइम पीसीआर आधारित परीक्षण विधि हैं। तिलापिया लेक वायरस का पता लगाने और उसकी सही मात्रा के बारे में जानने के लिए दो जांच विधियों के बारे में यहां बताया गया है इनमें से एक रीयल–टाइम पीसीआर साइबर ग्रीन आधारित जांच विधि, जिसमें प्लास्मिड की दो (02) कॉपियों तक पता लगाने की विश्लेषणात्मक संवेदनशीलता (Tattiyapong et al., 2017) और दूसरी अत्यधिक विश्वसनीय टेक–मैन प्रोब आधारित रीयल–टाइम पीसीआर जांच विधि (Waiyamitra et al, 2018) के रूप विकसित की गई है।

झींगा में डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस 1 से संक्रमण और तिलापिया में तिलापिया लेक वायरस से संक्रमण को वर्ल्ड ऑर्गेनाइजेशन फॉर एनिमल हेल्थ के अंतर्गत सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव दिया गया है, लेकिन वर्तमान में यह एक्वेटिक एनिमल हेल्थ कोड के अध्याय 1.2 में वर्णित लिस्टिंग के सभी मानदंडों को पूरा नहीं करता है (OIE, 2016)। हालाँकि, ओआईई के अंतर्गत परीक्षण के लिए अभी तक कोई ओआईई सूचीबद्ध मेथड उपलब्ध नहीं है, परंतु ऊपर दिए गए अंतरराष्ट्रीय शोध लेखों पर आधारित डिकैपोड इरीडिसेंट वायरस 1 और तिलापिया लेक वायरस के लिए प्रयोग होने वाले सभी आणविक परीक्षणों (मॉलिक्यूलर टेस्ट) कोए नियमित परीक्षण में अपनाने से पहले और अधिक विधि सत्यापन (मेथड वैलिडेशन) की आवश्यकता होती है।

एकता में शक्ति

श्री.चन्द्रकांत बी.कोटक
संयुक्त निदेशक
निनिअ–कोच्ची

एकता में शक्ति विषय पर हम सब भली भांति परिचित हैं। हम सभी को इस विषय पर बुनियादी शिक्षा के दरमियान पाठशाला में कहानियों के द्वारा बोधपाठ सिखाया गया है। आप सब जानते हैं कि कारपेंटर की टूलकिट में काफी सारे औजार होते हैं और सबकी अलग अलग भूमिका रहती है।

इस विषय के अनुरूप आइए , देखते हैं कारपेंटर टूल कमेटी का संवाद :

''वह बहुत शोर मचाता है। उसे इस्तीफा देना होगा.''

''बिल्कुल ठीक, मै सहमत हूँ उसे जाना होगा.'' जब कारपेंटर टूल्स कमेटी के सदस्यों ने पीठासीन अध्यक्ष श्री हथौड़े के इस्तीफे की मांग की, तो सभी ने एक ही सुर में हामी भरी। दुश्मनी को भांपते हुए श्री हथौड़ा खड़े हुए और जवाब दिया, ठीक है, मैं जाता हूँ। लेकिन सिर्फ तभी, जब श्री छेनी भी इस्तीफा दे दें। देखिए, उनके काम में कोई गहनता नहीं है। यह हमेशा छिछ्ला होता है।

श्री छेनी पर सबकी निगाहें टिकी तो उन्होंने तुरंत कहा, अच्छा यदि मैं जाऊंगा तो श्री रूल (माप पट्टी) को भी जाना पड़ेगा। वह हमेशा लोगों को ऐसे मापता है जैसे कि इकलौता एक वही सिर्फ सही है।

सबका ध्यान श्री रूल (माप पट्टी) पर गया। इस मुद्दे से बचते हुए, उन्होंने श्री सैंडपेपर पर आरोप लगाया, "मुझे लगता है कि उन्हें जाना चाहिए क्योंकि जितना कठोर उन्हें होना चाहिए था, वह उससे कहीं ज्यादा है। वह हमेशा गलत तरीके से लोगों को रगड़ रहा है"!

दोष को अपने से परे करते हुए, श्री सैंडपेपर ने श्री .आरा पर ध्यान केंद्रित किया, मेरी राय में ''श्री आरा को इस्तीफा देना चाहिए क्योंकि वह हमेशा लोगों को काटते रहते हैं''। आरोपों से क्रोधित होकर, श्री आरा जवाबी कार्रवाई करने ही वाले थे कि बढ़ई (कारपेंटर) अंदर आया। उन्होंने अपने काम के बैग में औजारों को इकट्ठा किया और एक सुंदर और उपयोगी अलमारी बनाने के लिए उन्हें अपनी कर्मशाला में ले गया ।

अकेले में उपकरणों का आपस में मनमुटाव था और वे एकजुट नहीं रह पाये। लेकिन जब बढ़ई ने उन्हें एक साथ किया, तो उन्होंने एक–दूसरे के साथ मिलकर एक सुंदर अलमारी बनाई। यही एक साथ काम करने की – एकता की ताकत है।

साथ हों तो हर कोई बहुत कुछ हासिल कर सकता है। लेकिन यह तभी सच होता है जब लोगों को अपनी भूमिका का एहसास होता है और टीम लीडर द्वारा उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरा किया जाता है।

एकता का मूल्य

ऊपर का उदाहरण एकता की ताकत को दर्शाता है।

एक संयुक्त परिवार ही एक सुखी परिवार है। लंबे समय तक चलने वाले मनमुटाव को एकता का यह बंधन दूर करता है। यद्यपि विचारों में मतभेद हो सकता है, लेकिन वे समझौता कर लेते हैं और एक बन जाते हैं। ऐसे परिवार जहां माता–पिता और बच्चे पूर्ण सद्भाव में रहते हैं, उन्हें पड़ोसी भी ईर्ष्या भरी नज़रों से देखते हैं।

खेल की सफलता में भी एकता अहम भूमिका निभाती है। आपसी अनबन, असहमति और बकवास करने वालों की एक फुटबॉल टीम के प्रदर्शन की तुलना एक ऐसे टीम से करें जो इस तरह के क्लेश से मुक्त है। इतिहास बताता है कि दूसरी टीम पहले की तुलना में कहीं अधिक सफल है। कारण स्पष्ट है – एकता की कमी मनोबल को तोड़ती है, साहस को कम करती है और टीम के प्रभावी प्रदर्शन की क्षमता को कम करती है।

यहां तक कि वैज्ञानिक भी इस बात से वाकिफ हैं और एकता की बृहत्त शक्ति का उपयोग करने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहे हैं। बीसवीं शताब्दी के मध्य से, वैज्ञानिकों ने ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए परमाणु विखंडन की प्रक्रिया का उपयोग किया है। हालांकि यह एक बहुत ही कुशल तरीका है, लेकिन यह बहुत अधिक जहरीला रेडियोधर्मी अपशिष्ट पैदा करता है। इसलिए, परमाणु संलयन प्रौद्योगिकी के उपयोग को परिष्कृत करने के प्रयास जारी हैं। इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन के दो परमाणु आपस में जुड़ जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारी तत्व बनते हैं और नाभिकीय विखंडन से उत्पन्न ऊर्जा से कहीं अधिक ऊर्जा निकलती है। इसके अलावा, परमाणु संलयन ऊर्जा उत्पादन का एक स्वच्छ और गैर विषैला तरीका है। इस प्रकार, परमाणुओं को एकजुट करने का कार्य, हालांकि उन्हें विभाजित करने से अधिक कठिन है, अधिक लाभ देता है। यही एकता हासिल कर सकती है।

इस प्रकार, एकता या आपसी सहयोग, मानव अस्तित्व और प्रगति का केंद्र है।

मेडिटेशन (ध्यान) का महत्त्व

श्री कुलदीप सिंह
उप निदेशक तकनीकी
निनिप–नई दिल्ली

ध्यान एक मानसिक व्यायाम है जिसमें रिलैक्सेशन, फोकस और जागरूकता शामिल है। जिस तरह शरीर के लिए शारीरिक व्यायाम काम करता है वैसे ही मेडिटेशन दिमाग के लिए एक अभ्यास है। यह अभ्यास आमतौर पर व्यक्तिगत रूप से बैठकर शांत स्थिति में और आंखें बंद करके किया जाता है।

मेडिटेशन एक अभ्यास है, जिसमें कोई व्यक्ति एक तकनीक का उपयोग करके, जैसे माइंडफुलनेस, किसी विशेष वस्तु, विचार या गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि फोकस और अवेयरनेस को बढ़ाया जा सके। इसका अभ्यास एक व्यक्ति को मानसिक रूप से स्पष्ट बनाता है और भावनात्मक रूप से शांति और स्थिरता प्रदान करता है।

मेडिटेशन के विभिन्न प्रकार :

1. ज़ेन मेडिटेशन

ज़ेन मेडिटेशन बौद्ध परंपरा का एक हिस्सा है। इसका अभ्यास एक ट्रेंड प्रोफेशनल के मार्गदर्शन में करना चाहिए। इसके अभ्यास में कुछ विशेष स्टेप्स और आसन शामिल होते हैं। यह आपके दिमाग को तेज़ करने में मदद करता है और आपको तनाव दूर करके रिलैक्सेशन प्रदान करता है।

2. माइंडफुलनेस मेडिटेशन

माइंडफुलनेस मेडिटेशन का ध्यान का एक रूप है जो अभ्यास करने वाले व्यक्ति को वर्तमान में जागरूक और उपस्थित रहने में मदद करता है। इस मेडिटेशन के अभ्यास से आप खुद को सचेत और सतर्क बना सकते हैं। इसके अभ्यास के दौरान आप अपने आस–पास हो रही सभी गतिविधियों, ध्वनियों और महक पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसका अभ्यास कहीं भी, कभी भी किया जा सकता है।

3. अध्यात्मिक मेडिटेशन

हिंदू और ईसाई धर्म में पॉपुलर, आध्यात्मिक ध्यान आपको अपने ईश्वर के साथ एक गहरा संबंध बनाने में मदद करता है। इस ध्यान का अभ्यास करने के लिए आपको इतना सुनिश्चित करना है कि आप मौन में बैठें और अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करें। ध्यान करते हुए आप का हर एक विचार आपकी सांसों पर केंद्रित होना चाहिए।

4. कुंडलिनी योग ध्यान

कुंडलिनी योग ध्यान का एक प्रकार है जिसमें आप शारीरिक रूप से सक्रिय होते हैं। इसमें गहरी सांस लेने और मंत्रों का उच्चारण करने के साथ–साथ कई मवमेंट्स भी शामिल होते हैं। इसके लिए आपको आमतौर पर क्लास लेने की आवश्यकता होती है या फिर आप किसी प्रशिक्षक से सीख सकते हैं। हालांकि, आप घर पर भी आसन और मंत्र सीख सकते हैं।

5. मंत्र मेडिटेशन

मंत्र एक संस्कृत शब्द है जो दो शब्दों से मिलकर बना है मन (उंद) जिसका अर्थ है "मस्तिष्क" या "सोचना" और त्राइ (trai) जिसका अर्थ है ''रक्षा करना'' या ''से मुक्त करना''। इसलिए मंत्र का मतलब है अपने मन को मुक्त करना या सोच को मुक्त करना। मंत्र मेडिटेशन का अभ्यास आपके मन को नेगेटिव विचारों से दूर करके इसे सकारात्मकता की ओर ले जाता है।

मेडिटेशन (ध्यान) के लाभ

- यह तनाव कम करता है। ...
- बात बात पर चिंता करना कम हो जाता है। ...
- भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ाता है। ...
- स्व–जागरूकता बढ़ाता है। ...
- एकाग्रता बढ़ाता है। ...
- भूलने की समस्या को कम करता है। ...
- ध्यान आपको दयालु बनाता है। ...
- बुरी आदतों को छोड़ने में मदद करता है।

मेडिटेशन का अभ्यास आप योग की तरह ही दिन में एक या दो बार कर सकते हैं लेकिन जरूरी है कि इसका अभ्यास आप हर रोज़ करें। मेडिटेशन का अभ्यास वैसे तो दिन में किसी भी समय किया जा सकता है, जब भी आप इसे करने में सहज हो और आपके आस–पास का माहौल फोकस करने के लिए उचित हो। परंतु सुबह का समय सूरज उगने पर मेडिटेशन का अभ्यास करना सबसे उचित माना जाता है। यह आपकी इंद्रियों को खोलता है, दिमाग को सक्रिय करता है, और मन को शांत करता है। इसके अलावा आप शाम के समय भी मेडिटेशन का अभ्यास कर सकते हैं।

सकारात्मक दृष्टि का प्रभाव

ब्रजेश कुमार शर्मा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
निनिप, नई दिल्ली

मनुष्य का मन ही बंधन है और मन ही मोक्ष का कारण है. मन में अच्छे बुरे विचार आते रहते है, जब हम सकारात्मक रहते है तो मन में अच्छे विचारों का आगमन होते रहता है और हमारा आत्मविश्वास बना रहता है। लेकिन जब हम नकरात्मक होते है तो बुरे विचारों के साथ–साथ मन में घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, कुंठा, इत्यादि आ जाते है। हम जो सोचते, शून्य में उसका बीजारोपण होता है, इसी वातावरण में रहता है। यदि मन में निगेटिव विचार आता है तो आने वाले समय में उसका प्रभाव पड़ता है, उसे भुगतना पड़ता हैं क्योंकि जिस मन से मुक्ति या मोक्ष का द्वार खुलता है वह मन अवश्य ही शक्तिशाली रहता है। मन यदि सकारात्मक नजरिया रखता है तो उसका बीजारोपण सकारात्मक के साथ शून्य में रहता है, और वही हमें मिलता है, यहाँ तक कि मन में किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति जैसा भाव रहता है, वही लौटता है, मन यदि दूसरे व्यक्ति का बुरा सोचता है तो वही नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं।

यदि हमारा मन किसी की निंदा, शिकायत करता है या अनिष्ट चाहता है, तो हम दूसरे का पाप, कष्ट ले रहे हैं उसका तो बिना साबुन और पानी के बिना ही मन साफ हो रहा है। यहाँ पर साबुन और पानी का तात्पर्य जप–तप, या ध्यान–साधना से है, जो निन्दा करता है, उस निन्दा का प्रभाव उस निन्दक पर पड़ता है, क्योंकि जो भी सोचते है वह इस शून्य में रहता है, जो कालांन्तर में उसी रुप में वापस वही लोटता है। शायद यह मन आईने की तरह है। मन में घृणा, द्वेष या ईर्ष्या रहेगी तो अच्छी चीज भी खराब लगेगी। यदि हम सबके प्रति दयाभाव, प्रेमभाव रखेंगे, तो मन बचन कर्म को एक करेंगे तभी हमारा मन निर्मलता की और बढ़ेगा। मन में मधुरता आएगी, तो वाणी में भी स्वतः मधुरता आएगी। यह सभी चीजें हमारे जीवन में उत्प्रेरक का काम करती है, क्योंकि साधना का भी लक्ष्य अपने मन की नकारात्मकता को खत्म कर हृदय को, अंतकरण को शुद्ध और निर्मल बनाना है, और तभी प्रज्ञान मिलेगा। साधना ही सकारात्मक दृष्टि का एक मात्र स्रोत हैं।

घर से काम (वर्क फ्रॉम होम)

खिमा नन्द
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
निर्यात निरिक्षण परिषद्

इस वर्ष को मार्च, 2021 से पहले की स्थिति और उसके बाद की स्थिति में विभाजित किया जा सकता है। क्योंकि इन स्थितियों में एक स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। अर्थात वह दिन जब देश में राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की शुरुआत हुई। इसे देश में कोविड–19 महामारी की शुरुआत के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। लेकिन यह अधिकतर लोगों के सामान्य जीवन और कार्य करने के तरीकों में आए आमूलचूल बदलाव का प्रतीक बन गई है। ये वो दिन हें जब हमारे घर और कार्यालय एक हो गए।

अप्रैल के अंत तक, देश में लगे लॉकडाउन के चलते, कंपनियां व्यापार निरंतरता नियोजन में जुट गईं, कर्मचारियों की संख्या में छंटनी की गई, और कार्यक्षेत्र व घर के बीच की सीमा रेखा धुंधली हो गईं। कई उद्योगों ने लॉकडाउन के दौरान अपनी साइट–पर संबंधी व्यावसायिक गतिविधियों पर पूरी तरह से रोक लगा दी और साथ ही उन नीतियों को प्रारंभ किया, जिनसे कर्मचारियों को घर से काम करने की सुविधा मिले। साथ ही ऐसी नीतियां क्रियान्वयन में लाई गईं, जिनसे उत्पादकता में अधिकता निश्चित की जा सके। कई उद्योगों ने नई कार्य योजनाएं अपनाईं और बारी–बारी से कर्मचारियों को कार्यालय बुलाने की कल्पना को कार्यान्वित किया।

उपरोक्त कार्यान्वयन के दौरान, कई तरह की चुनौतियां भी सामने आई। घर से काम करने को लेकर कुछ नकारात्मक सुर्खियाँ भी आईं जिनमें मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दे भी शामिल हैं। यह बात भी सामने आई कि अधिकतर लोगों के लिए कार्यालय से काम करने की तुलना में घर से काम करना अधिक सुस्त और तनावपूर्ण रहा है। ऐसे स्थिर कार्य स्वरूप को दीर्घकालिक रूप से विपरीत स्वास्थ्य प्रभावों के लिए जाना जाता है, जिसमें तनाव के स्तर में बढ़ोत्तरी शामिल है।

कोविड–19 महामारी ने सभी क्षेत्रों से जुड़े उद्योगों को काम करने के नए तरीकों को खोजने और नए कार्य समाधानों के बारे में विचार करने के लिए मज़बूर किया है। कोविड–19 भले ही अकल्पनीय स्तर की वैश्विक आपदा हो, लेकिन इसने हमें मौजूदा कार्य प्रणालियों पर पुनर्विचार के लिए बाध्य किया है।

देश भर में उद्योगों तथा कर्मचारियों ने, घर से काम के द्वारा अपने कार्य को पूर्ण उत्पादकता के साथ घरों से संचालित करने में सफलता पाई। क्योंकि देश की आबादी के एक बड़े हिस्से के पास डिजिटल संसाधनों की व्यवस्था उपलब्ध थी। यद्यपि, घर से काम को एक स्थायी कार्य प्रणाली के रूप में दीर्घकालीन समय तक स्वीकार करना भी व्यावहारिक नहीं होगा।

बुजुर्गों के अनुभव-हिन्दी मुहावरे

श्री मनोज कुमार गुप्ता
उप निदेशक (तकनीकी)
निनिप, नई दिल्ली

हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे है,
खाने पीने की चीजों से भरे है...
कहीं पर फल है तो कहीं आटा–दालें है,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले है,
चलो, फलों से ही शुरू कर लेते है,
एक एक कर सबके मजे लेते है...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,
कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है

कोई डेड़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,
कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है,
कोई दाल भात में मूसरचंद बन जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते है,
आटे में नमक तो चल जाता है,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मुंह और मसूर की दाल है,

गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,
किसी के दांत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं,

कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,
किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है,

शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते हैं,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते है,
और शादी के बाद, दोनों हाथों में लड्डू आते हैं,

कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुंह में घी शक्कर है, सबकी अपनी अपनी तकदीर है...
कभी कोई चाय–पानी करवाता है,
कोई मख्खन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आ जाता है,

भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है, जितने मुंह है, उतनी बातें हैं,
सब अपनी–अपनी बीन बजाते है, पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है, सभी बहरे है,
बावरें है ये सब हिंदी के मुहावरें हैं...

ये गज़ब मुहावरे नहीं बुजुर्गों के अनुभवों की खान हैं...
सच पूछो तो हिन्दी भाषा की जान हैं..!

(यह रचना स्वरचित नहीं है !)

सौम्य किंतु लोकप्रियः वैनीला

सुमित गुप्ता
सहायक निदेशक (तकनीकी)
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची

1841 में, एक 12 वर्षीय गुलाम लड़के, एडमंड एल्बियस ने इस पौधे को हाथ से परागित करने की खोज की और यह एक वैश्विक क्रांति बन गई। इस मसाले का नाम बताएं?

विश्व में व्यापक स्तर पर संचित और लोकप्रिय आइसक्रीम स्वाद कौन सा है?

यह स्वाद मंदता का पर्याय है?

हां, शायद आपने सही अनुमान लगाया होगा, यह "वैनीला" है, जो दुनिया का सबसे लोकप्रिय स्वाद है, जो वैनीला प्लैनिफोलियाआर्किड की परिपक्व फली से प्राप्त होता है, और इसका उपयोग आइसक्रीम, दूध उत्पादों, कन्फेक्शनरी, परफ्यूमरी, फार्मास्यूटिकल्स, पेय उद्योग, आदि, में स्वाद और सुगंध सामग्री के रूप में किया जाता है। प्राकृतिक वैनीला के मुख्य उत्पादक देश मेडागास्कर, इंडोनेशिया, चीन, मैक्सिको और पापुआ न्यूगिनी हैं। भारत में वैनीला की खेती केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक में की जाती है। कई फ्लेवर हाउस हैं जो वैनीला निष्कर्षण में हैं और भारत में अपना आधार फैलाते हैंः कुछ नाम हैं – मैककॉर्मिक, सिमरिस, आईएफएफ, डोहलर आदि।

वैनीला एक आर्किड बेल है जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में उगाई जाती है और पीले फूल, जब हाथ से परागण किया जाता है तो एक हरी फली पैदा होती है जिसे बाद में कटाई, सुखाने और इलाज की प्रक्रिया के माध्यम से रखा जाता है। अंतिम उत्पाद भूरा–काली फली है जिसे हम पेटू खाद्य भंडार में देखते हैं। इस फली में वैनिलिन और अन्य प्राकृतिक रसायनों में लिपटे बीज होते हैं जो वैनीला को इसका विशिष्ट स्वाद देते हैं। वैनिला का अर्क बनाने के लिए कई विधियों का उपयोग किया जाता है, लेकिन मांग–आपूर्ति अंतर और लागत तंत्र के कारण, सिंथेटिक वैनीला का उत्पादन कई देशों में गति प्राप्त कर रहा है।

वास्तव में, इसका विशिष्ट स्वाद और सुगंध मुख्य रूप से "वैनिलिन" से आता है, जो एक मेटाबोलाइट है और वैनीला अर्क का मुख्य घटक है जो कि ठीक किए गए वैनीला बीन्स में 1.0–2.0% w /w की एकाग्रता में होता है। वैनिलिन रासायनिक रूप से एक 4–हाइड्रॉक्सी–3–मेथॉक्सीबेन्ज़ेल्डिहाइड है, जो आणविक सूत्र C8H8O3 के साथ एक कार्बनिक यौगिक है। वैनिलिन के तीन बाजार स्रोत हैं अर्थात– प्राकृतिक, रासायनिक/सिंथेटिक और जैव प्रौद्योगिकी। इसके अलावा, स्रोत और संश्लेषण की प्रक्रिया के आधार पर, इसे प्राकृतिक या कृत्रिम स्वाद के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। प्राकृतिक और जैव–तकनीकी रूप से उत्पादित वैनिलिन (एक सब्सट्रेट के रूप में फेरुलिक एसिड से) को दुनिया भर के

अधिकांश खाद्य नियंत्रण अधिकारियों द्वारा खाद्य–ग्रेड एडिटिव्स के रूप में माना जाता है। इसके अलावा, एफडीए की आमतौर पर सुरक्षित (जीआरएएस) सूची में खाद्य योज्य के रूप में वैनीला / वैनिलिन शामिल है।

सिंथेटिक वैनिलिन लिग्निन, यूजेनॉल, गुआयाकोल, आदि से तैयार किया जा सकता है। इसमें एक विशिष्ट वैनीला जैसा नोट होता है लेकिन ऑर्गेनोलेप्टिक गुणों में कम होता है। नकली वैनीला (प्रकृति समान कहा जाता है) का निर्माण लकड़ी के गूदेए चावल की भूसी और लौंग के तेल से वैनिलिन को निकालकर किया जाता है, जिसकी लागत काफी कम होती है। कास्ट फैक्टर के कारण, दुनिया भर में इस्तेमाल होने वाली ज्यादातर वैनिला सिंथेटिक होती है।

वैनीला अर्क बेकिंग उद्योग का दिल है। वैनीला के बिना, आपकी कुकीज़, केक और पाई अब आपके डेज़र्ट स्प्रेड का विकल्प नहीं होंगे। शुद्ध वैनीला में बोर्बोन, रम और सूखे फल के संकेत के साथ एक मजबूत, पुष्प जैसी मिठास होती है। वैनीला अर्क की गुणवत्ता काफी भिन्न हो सकती है, इसलिए यह जानना आवश्यक है कि आपका वैनीला कहाँ से आता है और यह बेकर का सबसे अच्छा दोस्त कैसे बनता है !!

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 10 मुख्य बिन्दु

श्री वसी असगर
सहायक निदेशक,
निनिप, नई दिल्ली.

अपनी किताब ''आउट ऑफ क्राइसिस (Crisis)'' में डब्ल्यू एडवर्ड्स डेमिंग कहते हैं, "हर कोई अपना सर्वश्रेष्ठ कर रहा है, यह कोई जवाब नहीं है, सबसे पहले यह आवश्यक है कि लोगों को पता चले कि क्या करना है।"

लोगों को पता करने के लिए वास्तव में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गतिविधियों प्रणाली उन्मुख हो जब खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली (एफएसएमएस) की बात आती है, तो दुनिया भर में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मानक चलन में हैं। कुछ सर्वविदिद उदाहरण हैं:

1. खाद्य सुरक्षा के लिए ब्राण्ड रिप्यूटेशन थ्रू कम्पलाइस (बीआरसी)
2. अंतर्राष्ट्रीय खाद्य मानक (आईएफ़एम)
3. आईएसओ 22000:2018 इत्यादि

प्रत्येक खाद्य सुरक्षा मानक जोखिम विश्लेषण और क्रांतिक नियंत्रण बिंदुओं (एचएसीसीपी) के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि आपको अपनी प्रक्रिया में सभी संभावित खतरों का मूल्यांकन करना चाहिए और फिर सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक को एक या दूसरे चरण में नियंत्रित किया जा रहा है। एफएसएमएस को लागू करते समय, उपर्युक्त मानकों में से किसी एक को अनुकूलित किया जा सकता है। परिणाम लगभग तब तक समान होंगे जब तक प्रणाली को वास्तविक गुणवत्ता के उद्देश्य के साथ लागू किया जाता है।

इसलिए यदि मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं, तो पालन करने के लिए प्रासंगिक खाद्य सुरक्षा मानक का चयन करते समय आपको भ्रमित नहीं होना चाहिए:

1. सुनिश्चित करें कि ग्राहकों और उपभोक्ताओं को प्रदत्त खाद्य सुरक्षित है।
2. आश्वस्त रहें कि कोई बाहरी विफलता या ग्राहकों की शिकायत नहीं होगी।
3. आश्वस्त रहें कि कोई उत्पाद रिकॉल नहीं होगा।
4. सुनिश्चित करें कि नाममात्र या महत्वपूर्ण आंतरिक विफलताएं होंगी।
5. ग्राहकों को प्रसन्न करें।
6. न्यूनतम पुनर्विक्रय और उच्च उत्पादकता सुनिश्चित करें।

प्रणाली को बदलना

शीर्ष प्रबंधन और कारखाने के प्रमुखों को यह समझना चाहिए कि एचएसीसीपी या खाद्य सुरक्षा मानक को अपनाने के लिए प्रणाली में कुल बदलाव की आवश्यकता है। एचएसीसीपी को लागू करने और बनाए रखने के लिए हर कोई समान रूप से जिम्मेदार है ताकि यह प्रत्येक गतिविधि में परिलक्षित हो। ऐसा होने के लिए, शीर्ष प्रबंधन को एचएसीसीपी की आवश्यकताओं को समझना चाहिए, और संगठनात्मक नीतियों और लक्ष्यों को इसे प्रतिबिंबित करना चाहिए।

सामान्य तौर पर, संगठन अपने द्वारा अनुसरण किए जा रहे मानक की आवश्यकताओं के अनुसार खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता नीतियां और लक्ष्य स्थापित करते हैं। लेकिन कभी–कभी, इन नीतियों और लक्ष्यों का कार्यान्वयन ऑडिट तक सीमित होता है और सांस्कृतिक परिवर्तन की कमी के कारण अक्सर पूरे संगठन के भीतर पूरी तरह से अपनाया नहीं जाता है।

एचएसीसीपी प्रणाली को शीर्ष प्रबंधन के माध्यम से संगठन में लाया जाना चाहिए। संगठनात्मक नेतृत्व को लगातार यह देखना चाहिए कि क्या योजना बनाई गई है और कार्यान्वयन के दौरान वास्तव में क्या होता है। अगोचर कड़ियों को जानना एक सच्ची खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली को लागू करने की दिशा में पहला कदम है।

कई वर्षों तक एचएसीसीपी टीम लीडर के रूप में काम करते हुए, मैंने एचएसीसीपी प्रणाली से वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए शीर्ष 10 महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की एक सूची विकसित की है।

1. जीएमपी और पीआरपी

खाद्य व्यवसाय के प्रबंधन के लिए अच्छी विनिर्माण प्रथाओं (जीएमपी) या पूर्वापेक्षा कार्यक्रमों (पीआरपी) को अपनाना एक अंतर्निहित आवश्यकता है। अच्छी तरह से लागू पीआरपी या जीएमपी में शामिल हैं:

- स्थापना डिजाइन और सुविधाओं का नियंत्रण।
- संचालन का नियंत्रण।
- रखरखाव और स्वच्छता।
- परिवहन।
- अंतिम उत्पाद विनिर्देश।
- जोखिम आकलन।
- व्यक्तिगत स्वच्छता।
- ग्राहक शिकायत प्रबंधन।
- कीट नियंत्रण।
- उत्पाद रीकॉल और पता लगाने की क्षमता।

- एक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- एक सफाई और स्वच्छता कार्यक्रम।

इन पीआरपी से किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि पीआरपी में किसी भी विचलन के परिणामस्वरूप अवांछित परिणाम होंगे और वास्तविक एचएसीसीपी प्रणाली का अभाव होगा। जीएमपी और पीआरपी संगठन के विशिष्ट गुण होना चाहिए।

2. सीसीपी के लिए विशेष देखभाल।

परिभाषा के अनुसार, एक सीसीपी एक संभावित खतरे को नियंत्रित करने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई प्रक्रिया में एक कदम है। अधिकांश खाद्य सुरक्षा खतरे इसलिए होते हैं क्योंकि सीसीपी को अनदेखा किया गया था या ठीक से संभाला नहीं गया था।

खाद्य सुरक्षा से संबंधित कोई भी शिकायत– उदाहरण के लिए, एक भौतिक, रासायनिक या जैविक खतरा– भी एक अनदेखा सीसीपी के कारण होने की संभावना है। कुछ उदाहरणों पर विचार करें:

- साल्मोनेला एक उत्पाद में पाया गया था। प्राथमिक जांच यह निर्धारित करने के साथ शुरू होनी चाहिए कि क्या उत्पाद को माइक्रोबियल कमी के लिए किसी प्रकार का उपचार दिया गया था। इसका उत्तर हां होना चाहिए। अगला कदम– स्टीम स्टेरीलाइसेशन, पाश्चराइजेशन या एथिलीन ऑक्साइड उदाहरण के लिए – एक सीसीपी है। क्या यह ठीक से कंट्रोल किया गया था?
- उत्पाद में एक धातु का टुकड़ा पाया गया था। प्राथमिक जांच इस बात से शुरू होनी चाहिए कि उत्पाद धातु के खतरों से मुक्त है या नहीं – ये एक सीपीसी होना चाहिए।

सीसीपी पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। शीर्ष कारखाना–स्तरीय प्रबंधन को यह जांचना चाहिए कि सीसीपी को कैसे संभाला जा रहा है और विचलन के मामलों में, तत्काल सुधारात्मक और निवारक कार्रवाई करें।

3. मार्केटिंग से ज्यादा

सिस्टम कार्यान्वयन का उद्देश्य एक विपणन उपकरण बनाने से अधिक होना चाहिए। सरकारी निकायों ने पहले ही एचएसीसीपी के महत्व को महसूस किया है। सभी आयातकों,

निर्यातकों और घरेलू खाद्य संचालकों के लिए अनुपालन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। इस वजह से, फूड हैंडलर जल्द से जल्द एचएसीसीपी प्रमाणन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

वैश्वीकरण के इस युग में, खाद्य संचालकों को पता है कि एचएसीसीपी के बिना, उनका व्यवसाय जीवित नहीं रह सकता है। एचएसीसीपी प्रमाणीकरण ग्राहकों और उपभोक्ताओं को जबरदस्त विश्वास देता है और व्यापार को बढ़ावा दे सकता है; इसलिए, एचएसीसीपी भी एक विपणन उपकरण बन गया है।

हालांकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एचएसीसीपी प्रणाली का मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण खाद्य के सुरक्षित वितरण में ग्राहकों का विश्वास बढ़ाना है, लेकिन यह सुरक्षा तभी प्राप्त करना संभव है जब एचएसीसीपी को एक गुणवत्ता के रूप में अपनाया जाए और केवल एक विपणन के रूप में उपयोग न किया जाए। व्यापार को आकर्षित करने के लिए उपकरण।

4. सिर्फ ऑडिटर के लिए नहीं

संगठन अक्सर अपने एचएसीसीपी सिस्टम के दिन–प्रतिदिन के रखरखाव को भूल जाते हैं जब तक कि कोई ऑडिट न हो या ग्राहकों से ऑपरेशन पर जाने की उम्मीद न हो। शिपमेंट, उत्पादन, लक्ष्य उपलब्धि और बिक्री जैसे शब्दों को गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा जैसे शब्दों पर प्राथमिकता नहीं दी जा सकती है।

एक संगठन में, उदाहरण के लिए, हर महीने एक आंतरिक ऑडिट किया जाना था, लेकिन विभिन्न नियमित मुद्दों और अत्यावश्यकताओं के कारण, किसी के पास रिकॉर्ड अपडेट करने का समय नहीं था। इसलिए रिकॉर्ड केवल तभी अपडेट किए गए जब ऑडिट निकट था।

ऑडिटर एक या दो दिनों के लिए आएंगे, और ग्राहक कभी–कभार आ सकते हैं, लेकिन शेष 340 दिन आपके हैं। आपको यह तय करना होगा कि आप अपने सिस्टम की आवश्यकताओं को कैसे बनाए रखेंगे।

यह सुनिश्चित करना कि सिस्टम कार्यान्वयन केवल लेखा परीक्षकों के लिए नहीं है, आपके संगठन को लाभान्वित करेगा। यह शीर्ष प्रबंधन से लेकर दुकान के कर्मचारियों, ग्राहकों, निवेशकों और अंततः समाज तक सभी को एचएसीसीपी के परिणाम देखने और प्रसन्न और स्वस्थ रहने की अनुमति देगा।

5. सिर्फ टीम लीडर की जिम्मेदारी नहीं

सिस्टम कार्यान्वयन और रखरखाव की जिम्मेदारी केवल टीम लीडर की नहीं है। मानक अनुशंसा करते हैं कि एक सिस्टम के प्रसार, स्थापना और रखरखाव के लिए जिम्मेदार एक टीम लीडर या प्रबंधन प्रतिनिधि हो। आईएसओ 22000:2005 का खंड 5.5 कहता है, "एक खाद्य सुरक्षा दल का नेता होना चाहिए, जो अन्य जिम्मेदारियों के बावजूद यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदारी और अधिकार होगा कि खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली स्थापित, कार्यान्वित, अनुरक्षित और अद्यतन की गई है।" बीआरसी जीएसएफएस

के खंड 2.12 में कहा गया है, "एचएसीसीपी खाद्य सुरक्षा टीम में एक नामित और योग्य टीम लीडर होगा जो एचएसीसीपी की क्षमता और अनुभव का प्रदर्शन करने में सक्षम होगा।"

कुछ संगठन इसका अर्थ यह समझते हैं कि एचएसीसीपी से संबंधित सभी गतिविधियों के लिए टीम लीडर जिम्मेदार है, क्योंकि अन्य विभाग प्रमुखों सहित अन्य सभी को अन्य कार्य करने होते हैं।

सिस्टम को प्रत्येक व्यक्ति के जॉब प्रोफाइल की आवश्यकता होती है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करता है, सिस्टम समन्वयक के साथ उचित चर्चा के बाद स्थापित किया जाना चाहिए। यह संबंधित विभाग प्रमुखों से इनपुट प्राप्त करने के अतिरिक्त है। सिस्टम में शामिल होने के दौरान, यह महत्वपूर्ण है कि शामिल करने वाले अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझें और वास्तव में वही कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिए।

6. संचार अंतराल बंद करें

संचार अंतराल, विशेष रूप से अर्थ–संबंधी बाधाएं, कई बाहरी और आंतरिक विफलताओं और आउटपुट में असंगति या परिवर्तनशीलता के लिए जिम्मेदार हैं।

मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) और कार्य निर्देश आसानी से स्थापित और प्रलेखित हैं, लेकिन एक बड़ा अंतर यह जानना है कि एसओपी और कार्य निर्देश उपयोगकर्ताओं द्वारा स्पष्ट रूप से समझे गए हैं या नहीं। अक्सर नियमित संचालन में, हर कोई मानता है कि वह जो कर रहा है वह सही है।

पर्याप्त संचार सुनिश्चित करने के लिए शीर्ष प्रबंधन के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है। संचार सफल रहा है, यह सुनिश्चित करने के लिए स्टाफ साक्षात्कार और लिखित परीक्षा जैसे माप उपकरण होने चाहिए–हर कोई जानता है कि क्या करना है और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित है।

चुनौती यह है कि शौपफ्लोर पर काम करने वाले कर्मचारी ने, विशेष रूप से, वांछित आवश्यकताओं को समझ लिया है। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आवश्यकताओं को बार–बार ठीक से संप्रेषित किया गया है – और लगातार उनकी मॉनिटरिंग हो रही है।

7. समीक्षा बैठकें और आंतरिक लेखा परीक्षा

निरंतर सुधार सुनिश्चित करने के लिए आंतरिक ऑडिट और प्रबंधन समीक्षा बैठकें (एम आर एम) दो सबसे महत्वपूर्ण उपकरण हैं।

शीर्ष प्रबंधन को यह आश्वस्त करने के लिए एक आंतरिक ऑडिट किया जाता है कि संगठन खाद्य सुरक्षा प्रणालियों को लागू करने के अनुरूप है। अंतराल – यदि कोई हो – को गैर–अनुरूपता, टिप्पणियों या सुधार के अवसरों के रूप में उजागर किया जाता है। आंतरिक ऑडिट रिपोर्ट के आधार पर, संबंधित प्रक्रिया कार्यचालक द्वारा सुधारात्मक और निवारक कार्रवाई की जाती है।

एमआरएम का उद्देश्य कंपनी के एफएसएमएस की समीक्षा करना है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वांछित परिणाम प्राप्त किए जा रहे हैं, ग्राहकों की शिकायतों की समीक्षा करें और आंतरिक ऑडिट की समीक्षा करें। संगठन द्वारा परिभाषित आवृत्ति पर आंतरिक ऑडिट और एमआरएम का सख्त संचालन सर्वोत्तम परिणाम देगा।

आंतरिक ऑडिट किसी भी सिस्टम अंतराल को दिखाएगा। एमआरएम सुनिश्चित करेगा कि उचित सुधारात्मक और निवारक कार्रवाई की गई है और सिस्टम लगातार उपयुक्त है। शीर्ष प्रबंधन को अकेले ऑडिट उद्देश्यों के लिए इन आवश्यकताओं को सीमित करने के बजाय, आंतरिक ऑडिट और एमआरएम की प्रगति के बारे में टीम के प्रमुख से पूछना चाहिए।

8. बाधाओं पर काबू पाएं

बाधाएं हमेशा मौजूद रहती हैं। जिस प्रकार खाद्य सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है, वैसे ही, खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करने वाली किसी भी प्रकार की बाधा को दूर किया जाना चाहिए।

मासिक एचएसीसीपी और जीएमपी ऑडिट, एचएसीसीपी सत्यापन और अन्य गुणवत्ता जांच स्वचालित रूप से प्रक्रिया जनशक्ति और सिस्टम बाधाओं सहित आपके संगठन की बाधाओं को उजागर करेंगे।

जनशक्ति की कमी के एक उदाहरण पर विचार करेंः एक आंतरिक ऑडिट के दौरान, यह देखा गया कि दो श्रमिकों ने संयंत्र के अंदर अंगूठियां पहन रखी थीं, जिसके लिए संयंत्र नीति की अनुमति नहीं थी। जांच करने पर, यह निष्कर्ष निकाला गया कि वे श्रमिक नए थे और संयंत्र नीति से अवगत नहीं थे।

आगे की जांच में श्रमिक कारोबार की उच्च दर का पता चला। यह एक पुराना मुद्दा था और धारणा यह थी कि, सामान्य तौर पर, अकुशल पदों का कारोबार अधिक होता है।

इस तरह की बाधाओं को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करना शीर्ष प्रबंधन और मध्यम स्तर के प्रबंधन की जिम्मेदारी है।

9. फैक्टरी प्रबंधक की भूमिका

शीर्ष प्रबंधन के दृष्टिकोण और नेतृत्व के आधार पर प्रत्येक संगठन की प्रणाली भिन्न होती है। उसी तरह, संबंधित कारखाने के प्रमुखों के फोकस और नेतृत्व शैली के आधार पर प्रणाली एक निर्माण इकाई से दूसरी में भिन्न होती है।

गुणवत्ता आश्वासन के अलावा, निर्माण इकाई में उपयुक्त एचएसीसीपी प्रणाली लाने में कारखाना

प्रबंधक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक आम धारणा यह है कि कारखाने के प्रबंधक पर हमेशा यह सुनिश्चित करने का दबाव होता है कि शिपमेंट प्रतिबद्ध समय सीमा के भीतर हो, और जब यह दबाव हावी हो जाए, तो गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा पर ध्यान दिया जा सकता है। प्रशिक्षण, प्रबंधन समीक्षा बैठकों के लिए टीमों को प्रेरित करने में कम रुचि है। प्रभावी परिणामों की कमी है और आंतरिक ऑडिट निष्कर्षों पर कम ध्यान दिया जाता है। उत्पादन श्रमिकों के लिए गुणवत्ता का ध्यान रखना अक्सर कठिन होता है जब वे उत्पादन के दबाव में होते हैं।

दबाव कभी भी गुणवत्ता से अधिक महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए। प्रबंधन अधिक क्षमता के उत्पादन के लिए नहीं कहता है। श्रमिक काम करते हैं, मशीनें चलती हैं, कच्चे माल की आपूर्ति समय पर की जाती है। प्रभारी को गुणवत्ता और मात्रा दोनों का आश्वासन देना चाहिए।

10. प्रशिक्षण

शिफ्ट सुपरवाइजर, फिटर और वर्कर्स सहित प्रोडक्शन टीम की मानसिकता में एक छोटा सा बदलाव अद्भुत परिणाम दे सकता है, लेकिन यह एक चुनौती है। इस चुनौती को दूर करने के लिए, कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैंः

- संगठन में सभी के लिए निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित किए जाने चाहिए। मानव संसाधन प्रबंधक, एफएसएमएस टीम लीडर और संबंधित विभागों के प्रमुखों के साथ, आपातकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकल्प के साथ एक प्रशिक्षण कैलेंडर स्थापित करना चाहिए।
- वरिष्ठ प्रबंधन को प्रशिक्षण के महत्व को समझना चाहिए। कोई भी कार्यक्रम तब तक सफल नहीं होगा जब तक कि शीर्ष प्रबंधन दिलचस्पी न दिखाए। शीर्ष प्रबंधन को स्थापना और कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जोखिम टीम के सदस्य अक्सर आपातकालीन कार्य के कारण भाग नहीं लेते हैं, जिससे उनके वरिष्ठ उन्हें रिहा नहीं करेंगे।
- प्रभावी और परिणामोन्मुखी प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा से संबंधित प्रशिक्षण, जिसमें एक प्रणाली स्थापित करने का लक्ष्य होता है, हमेशा अन्य प्रशिक्षण से अलग होता है। इसमें न केवल ज्ञान साझा करना शामिल है, बल्कि प्रतिभागी को गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा के लिए नए सिरे से सकारात्मक सोच को सीखने और लागू करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के उद्देश्यों से अवगत कराया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के अंत में, एक परीक्षा होनी चाहिए – अधिमानतः वस्तुनिष्ठ–प्रकार के प्रश्न – या उपयुक्त ऑन–द–जॉब मूल्यांकन तकनीक जैसे कि प्रतिभागियों के प्रदर्शन का अवलोकन – एक निर्दिष्ट संख्या के दिनों के लिए – या प्रतिभागियों के साक्षात्कार। अपेक्षा से कम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को विभाग प्रमुख की उपस्थिति में विशेष सत्र प्रदान किया जाना चाहिए।

अपने लोगों को प्रशिक्षित करें और उन्हें प्रशिक्षण देना जारी रखें। आप एक गुणवत्तापूर्ण प्रणाली विकसित होते देखेंगे। ऑडिटर के लिए केवल आवश्यकताओं को पूरा न करें; अपने संगठन के लिए उनसे मिलें।

यदि आप खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता प्रणाली आवश्यकताओं के गहन अर्थ को समझते हैं और इन आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से लागू करते हैं, तो आपका उत्पाद आपके सिस्टम की प्रभावशीलता के लिए बोलेगा। एक ठोस एचएसीसीपी प्रणाली के साथ, आपका संगठन विकसित होगा और एक स्वस्थ वैश्विक समाज में योगदान देगा।

सेवानिवृत्त कर्मचारी

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्त
1.	श्री टी. आदिनारायण	प्रयोगशाला परिचारक निनिअ–चेन्नई, उप कार्यालय भीमावरम	31, अक्टूबर, 2020
2.	श्री ए.के. गुप्ता	कार्यालय सहायक निनिअ–दिल्ली, उप कार्यालय कानपुर	31, दिसंबर, 2020
3.	श्री के.पी. मोहन	केयर टेकर ग्रेड–II निनिअ–कोच्चि	31, दिसंबर, 2020
4.	श्री प्रेम चंद शर्मा	एमटीएस निनिअ–दिल्ली	28, फरवरी, 2021
5.	श्रीमती बिमला देवी	सीजी–II निनिअ–दिल्ली, उप कार्यालय इंदौर	31, मार्च, 2021

नवनियुक्त अधिकारी

1.	श्री मुदासिर याकूब	तकनीकी अधिकारी निनिअ–चेन्नई	25, मार्च, 2021
2.	श्री मुदावथ रविन्द्र नायक	तकनीकी अधिकारी निनिअ–मुंबई	24, मार्च, 2021